मंचीय कविता : संरचना-विश्लेषण

डॉ. गोविन्द प्रसाद वर्मा
(सहायक आचार्य)
हिंदी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी(बिहार)- 845401
Email: govindprasadverma@mgcub.ac.in

स्नातकोत्तर हिंदी, द्वितीय सेमेस्टर
प्रश्नपत्र: लोकप्रिय साहित्य और संस्कृति (HIND 4018)

विषय-सूची

- मंचीय / कवि-सम्मेलनी कविता का अर्थ
- मंचीय कविता की संरचना
  - मंच-व्यवस्था
  - काव्य-पाठ एवं भाव-प्रदर्शन
  - कवि-सम्मलेन के विविध रूप
  - अध्यक्ष, मुख्य अतिथि एवं उद्घाटन
  - परिचय, स्वागत तथा काव्य-पाठ का क्रम
  - संचालक
  - ध्वनि और प्रकाश-व्यवस्था
  - बैठने की व्यवस्था
  - आतिथ्य-सत्कार और व्यय-भार
- निष्कर्ष
- संदर्भ-ग्रंथ-सूची

❖ मंचीय / कवि-सम्मेलनी कविता का अर्थ

- 'मंचीय' शब्द 'मंच' संज्ञा से बना है, जिसका अर्थ होता है- ' खाट, खटिया, सभा समितिओं में ऊँचा बना हुआ मंडप |' इसका अर्थ – प्रतिष्ठा का स्थान और व्यास गद्दी से भी सभी लगाया जाता है | इसी 'मंच' शब्द से मंचन, रंगमंच (नाट्य-व्यापार हेतु) आदि शब्द भी निर्मित हुए हैं |
- 'मंच' के लिए अंग्रेजी में Platform, Stage, Forum (विभिन्न स्थितियों के लिए) शब्द प्रयुक्त होते हैं |
- कवियों / रचनाकारों द्वारा अपनी रचनाओं का मंच से पाठ तथा प्रत्यक्ष आस्वादकों / श्रोताओं द्वारा रसास्वादन करना 'मंचीय कविता' कहलाता है |
- कवि-सम्मेलन का शाब्दिक अर्थ है- "कवियों का सम्मलेन अर्थात् ऐसा आयोजन जिसमें विभिन्न कवि एकत्र होकर अपनी-अपनी कविताओं का एक ही मंच से पाठ करें |" (विशेष लक्ष्मी वीणा)

- इससे स्पष्ट है कि 'मंचीय कविता' और 'कवि-सम्मेलनी कविता' शब्द पर्यायवाची हैं | इसके साथ ही कवि-गोष्ठी शब्द भी प्रचलित है | इसके लिए उर्दू भाषा में 'मुशायरा' शब्द का प्रयोग किया जाता है |

- कवि-सम्मेलनों का आयोजन राष्ट्रीय, धार्मिक, महापुरुषों का जन्म दिन, सामाजिक, ऐतिहासिक पर्वों, मेलों आदि सामूहिक उल्लास के अवसरों पर किया जाता है | इसके अतिरिक्त स्वतंत्र काव्य-गोष्ठियाँ और साहित्यिक कवि-सम्मेलनों का भी आयोजन होता है |

- रेडियो और टेलीविजन जैसे आधुनिक माध्यमों से भी कवि-सम्मलेन आयोजित होते हैं |

❖ मंचीय कविता की संरचना

▪ मंच-व्यवस्था

- कवि-सम्मलेन प्राय: पंडाल बनाकर किये जाते हैं | सामान्यतः मंच तीन से पाँच फुट तक ऊँचा बनाया जाता है | कवि-सम्मेलन के अध्यक्ष, उद्घाटनकर्ता, कविगण आदि मंच पर ही बैठते हैं |
- मंच के सामने, दायें और बायें (सुविधानुसार) श्रोताओं के बैठने की व्यवस्था की जाती है |
- मंच की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि कवियों को कविता-पाठ करते समय श्रोता देख सकें और वह कवियों के हाव-भाव को पढ़ सकें |
- श्रोताओं की संख्या अधिक होने की स्थिति में कवियों की वाणी को श्रोताओं तक पहुँचाने के लिए ध्वनि-विस्तारक यंत्रों का सहयोग लिया जाता है |
- प्राय: एकल पाठ या छोटी गोष्ठियाँ दिन में जबकि बड़े आयोजन रात में होते हैं |

काव्य-पाठ एवं भाव-प्रदर्शन

- सामान्यतः कवि-सम्मेलनों में श्रृंगार रस, वीर रस, हास्य रस आदि रसों की कविताओं का पाठ होता है |
- कवि अपने कंठ-स्वर और हाव-भाव के द्वारा काव्यगत विषय-वस्तु को श्रोताओं के मानस जगत में मूर्त्त करने की कोशिश करता है |
- कवि, स्वर-संयोजन और भावपूर्ण प्रदर्शन में जितना निपुण होगा, वह श्रोताओं में उतना ही लोकप्रिय और समादृत होगा |
- मंच सिद्ध कवि सामान्यतः साहित्यिक अमंचीय कवियों से ज्यादा लोकप्रिय होते हैं |

कवि-सम्मलेन के विविध रूप

- रसों की दृष्टि से विभिन्न प्रकार के कवि-सम्मेलन होते हैं | इससे विविध रस-रूचि वाले श्रोता भी रसास्वादन से तृप्त हो जाते हैं | समय और अवसर के अनुकूल अलग-अलग कवि-सम्मेलन होते हैं, जैसे- होली के अवसर पर 'हास्य कवि-सम्मेलन' आदि |
- भाषिक दृष्टि से भी कवि-सम्मेलन होते हैं, जैसे- लोक भाषायी और सर्व भाषायी कवि-सम्मेलन |
- लोक भाषाओं में अर्थात् – भोजपुरी, मैथिली, अंगिका, ब्रज, अवधी आदि के कवि अपनी भाषाओं की कविता का पाठ करते हैं |
- सर्व भाषायी से तात्पर्य है- देश की प्रादेशिक भाषाओं से, जैसे - भारत सरकार द्वारा गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित होने वाले कवि-सम्मेलन आदि |
- इसके अतिरिक्त 'स्थानीय या क्षेत्रीय' तथा 'अखिल भारतीय' कवि-सम्मेलन का रूप भी प्रचलित है |

अध्यक्ष, मुख्य अतिथि एवं उद्घाटन

- कवि-सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए किसी वरिष्ठ कवि या किसी अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति का चुनाव करना चाहिए |
- किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को मुख्य अतिथि या विशिष्ट अतिथि बनाया जाता है |
- अध्यक्ष के आसन ग्रहण के पश्चात् उद्घाटनकर्त्ता को आमंत्रित करना चाहिए |
- उद्घाटनकर्त्ता अगर कवि हो तो वह भी कविता पाठ कर सकता है |

परिचय,स्वागत तथा काव्य-पाठ का क्रम

- संयोजक द्वारा कवियों का परिचय दिया जाता है तथा कार्यक्रम के अन्य सहयोगी अध्यक्ष, मुख्य अतिथि, कवियों आदि का स्वागत करते हैं |
- कवि-सम्मेलन सर्वप्रथम 'वाणी–वंदना' से शुरू होता है |
- कवियों की काव्य-प्रतिभा और प्रसिद्धि के अनुसार क्रमशः आमंत्रित किया जाता है | सामान्य कोटि (गुणवत्ता या नवीनता) के कवियों से शुरूआत करके क्रमशः उच्च कोटि की ओर जाया जाता है |
- सबसे अंत में अध्यक्ष का काव्य-पाठ होता है | परंतु, कभी-कभी श्रोताओं की माँग पर कवियों का वरिष्ठता क्रम बदला भी जाता है |

संचालक

- कवि-सम्मेलन के 'संचालक' का दायित्व प्राय: किसी वरिष्ठ कवि को दिया जाता है | 'संचालक' शब्द के स्थान पर 'संयोजक' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है |
- कवि-सम्मेलन की सफलता संचालक की कुशलता पर भी निर्भर होती है |
- संचालक को कवियों का क्रम ऐसा निर्धारित करना चाहिए, जो श्रोताओं के मनोनुकूल हो |
- संचालक को मंचस्थ कवियों के पाठ-शैली का पूर्व ज्ञान होना चाहिए |
- उसके साथ ही श्रोताओं के रूचि को भी समझते चलना चाहिए |

ध्वनि-व्यवस्था

- कवि-सम्मेलन की बहुत कुछ सफलता ध्वनि-व्यवस्था के समुचित प्रबंधन पर भी निर्भर करती है।
- लाउडस्पीकर की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि काव्य-पाठ की स्पष्ट ध्वनि मंचस्थ कवियों के साथ-साथ श्रोताओं को भी सुनायी दे।
- कवियों के लिए उच्च कोटि का 'माइक्रोफोन' होना चाहिए जिसमें कर्कश ध्वनि को भी मधुर बनाने की क्षमता हो। माइक्रोफोन से कम से कम एक फुट की दूरी से काव्य-पाठ करना चाहिए।
- ध्वनि-व्यवस्था के कुशल संचालन के लिए कारीगर, बिजली, बैटरी आदि का प्रबंध होना चाहिए।

प्रकाश-व्यवस्था

- कवि-सम्मेलन का आयोजन अगर रात्रि में हो रहा है तो वैसी स्थिति में प्रकाश की व्यवस्था अनिवार्य है |
- प्रकाश की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिससे मंचीय कवियों को काव्य-पाठ करते समय उन्हें श्रोता देख सकें तथा कविगण भी श्रोताओं की मनःस्थिति को समझ सकें |

बैठने की व्यवस्था

- कवियों की संख्या की दृष्टि से मंच को छोटा या बड़ा बनाना चाहिए | मंच पर केवल काव्य-पाठ करने वाले कवियों को ही बैठना चाहिए |
- आयोजक कार्यक्रम की रूपरेखा और अपनी सुविधानुसार श्रोताओं के बैठने की व्यवस्था फर्श, कुर्सी आदि पर कर सकता है |

- मंच से श्रोताओं के बैठने की व्यवस्था की आरंभिक दूरी पांच या छः फुट होनी चाहिए |
- मंच के सामने और समीप सदैव वरिष्ठ तथा काव्य-मर्मी आस्वादकों को स्थान देना चाहिए |
- वरिष्ठ नागरिकों, महिलाओं, विशिष्ट श्रोताओं आदि की अलग-अलग व्यवस्था होनी चाहिए | आवा-गमन हेतु समुचित मार्गों का भी निर्धारण होना चाहिए |

कवि-सम्मेलन का समापन

- काव्य-पाठ संपन्न होने के उपरांत कार्यक्रम के अध्यक्ष, मुख्य-अतिथि, विशिष्ट अतिथि, कवियों, श्रोताओं आदि को धन्यवाद देना चाहिए |
- धन्यवाद का कार्य, कार्यक्रम-समिति के किसी सदस्य को करना चाहिए |

आतिथ्य-सत्कार और व्यय-भार

- कवि-सम्मेलन में भाग लेने वाले कवियों के आतिथ्य-सत्कार, भोजन, विश्राम, यात्रा-व्यय, पारिश्रमिक, पुरस्कार आदि की व्यवस्था कार्यक्रम के पदाधिकारियों को करना चाहिए।
- 'काव्य-पाठ साहित्य की सेवा है।' इस दृष्टि से काव्य-पाठ करने वाले कुछ कवियों को छोड़कर बहुत से कवियों के लिए कवि-सम्मेलन व्यवसाय है और उसी दृष्टि से वे पारिश्रमिक भी लेते हैं।
- कार्यक्रम के आयोजन के लिए चंदे के माध्यम से धनराशि एकत्र की जाती है। कहीं-कहीं टिकट-बिक्री से भी धनराशि की व्यवस्था की जाती है।

❖ निष्कर्ष

- कवियों / रचनाकारों द्वारा अपनी रचनाओं का मंच से पाठ तथा प्रत्यक्ष आस्वादकों / श्रोताओं द्वारा रसास्वादन करना 'मंचीय कविता' कहलाता है |
- कवि-सम्मेलनों का आयोजन राष्ट्रीय, धार्मिक, महापुरुषों का जन्म दिन, सामाजिक, ऐतिहासिक पर्वों, मेलों आदि सामूहिक उल्लास के अवसरों पर किया जाता है | इसके अतिरिक्त स्वतंत्र काव्य-गोष्ठियाँ और साहित्यिक कवि-सम्मेलनों का भी आयोजन होता है |
- मंचीय कविता के संरचना-तत्व इस प्रकार है - मंच-व्यवस्था, काव्य-पाठ एवं भाव-प्रदर्शन, कवि-सम्मलेन के विविध रूप, अध्यक्ष, मुख्य अतिथि एवं उद्घाटन, परिचय, स्वागत तथा काव्य-पाठ का क्रम, संचालक, ध्वनि और प्रकाश- व्यवस्था, बैठने की व्यवस्था, आतिथ्य-सत्कार और व्यय भार |

❖ संदर्भ-ग्रंथ–सूची

- हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
- हिंदी साहित्य का इतिहास : (सं.) डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा
- हिंदी कवि-सम्मेलनों और मंचीय कवियों का साहित्यिक योगदान : विशेष लक्ष्मी वीणा, प्रगति प्रकाशन, आगरा
- साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका : मैनेजर पांडेय, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, चंडीगढ़

धन्यवाद !